॥ ओ३म् ॥

क्या तुम ऐसी ईसाईयत को मानते हो?

: लेखक :

डान बार्कर

क्या तुम ऐसी ईसाइयत को मानते हो?

डान बर्कर अनु डा. कृ. व. पालीवाल

ईसाई भाइयो! कल तुमने मुझसे कहा था कि मेरी सभी समस्याओं का हल ईसाइयत में है। मैंने इस पर गम्भीरता से विचार किया और पाया कि यह दावा सरासर झूठ है। वास्तव में ईसाइयत झूठी, हानिकारक, असहिष्णु और डुबाने वाली है।

क्या तुम मुझसे आशा करते हो कि मैं यह मानूं कि जीज़स मनुष्य के सर्ग से नहीं बल्कि एक देवदूत के द्वारा कुंवारी से जन्मा है? क्या तुम प्राचीन मतों की सभी मन गढ़न्त बातों को मानते हो? कहा जाता है क जूलियस सीज़र एक कुंवारी से जन्मा था। रोमन इतिहासकार स्यूटोनियस के अनुसार जब औगस्टस मर गया तो वह सशरीर उठकर स्वर्ग चला गया। क्या तुम यह सब मानते हो? शायद नहीं। तो फिर तुम मुझसे ईसाइयत की मनगढ़न्त कहानियों को मानने की आशा क्यों करते हो?

क्या तुम बाइबिल की ऐसी बातों को मानते हो? : तुम भले ही बाइबिल के आधार पर ऐसा प्रचार करो मगर मेरे लिए यह मानना कठिन होगा : (1) कि पृथ्वी की रचना केवल छः दिनों में की गई। (2) कि पुरुष की एक पसली की हड्डी से स्त्री की रचना की गई, (3) कि एक सांप, एक गधा और एक जलती हुई झाड़ी ने मनुष्य की भाषा बोली, (4) कि बुराई को डुबोने के लिए पहाड़ों सहित सारी पृथ्वी को पानी से डुबो दिया गया, (5) कि सभी नस्लों के जानवर जो लाखों प्रकार के थे, एक नाव पर सवार हो गए; (6) कि विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति बाबेल की मीनार से हुई है, (7) कि मोज़ेज के पास एक चमत्कारिक डंडा था, (8) कि नील नदी का पानी खून बन गया, (9) कि एक छड़ी साप में बदल गई, (10) कि भूत प्रेत डाइनें और जादूगरी आदि वास्तविकता है, (11) कि चालीस वर्षों तक भोजन की वर्षा होती रही, (12) कि तांबे के सांप को देखने मात्र से बीमार ठीक हो गए, (13) कि सूर्य जोशुओ को एक युद्ध में जिताने के लिए एक ही जगह ठहरा रहा और इतना ही नहीं वह राजा हेज़ेकिया को जिताने के लिए पीछे की ओर चला गया यानि सूर्य की गति बदल गई, (14) कि लोग जलती हुई भट्टी में जीवित बचे रहे, (15) कि एक कटा हुआ हाथ हवा में तैरता रहा और उसने एक दीवार पर लिखा भी, (16) कि लोगों ने एक तारे का पीछा किया जिसने एक विशेष घर की ओर इशारा किया (17) कि जीज़स किसी की सहायता के बिना पानी के ऊपर चले, (18) कि एक मछली और रोटी भूखों को खिलाने के लिए चमत्कारिक ढंग से बढ़ती चली गई, (19) कि पानी फौरन ही शराब में बदल गया, (20) कि मानसिक बीमारियां भूतों के कारण पैदा होती है, (21) कि एक पंखधारी राक्षस के कारण विपत्तियाँ आती

है, (22) कि परियों द्वारा उद्वेलित तालाब के पानी में जाने से लोगों की बीमारियाँ ठीक हो जाती है, (23) कि बिना शरीरधारियों की आवाजें आकाश से निकलीं, (24) कि पहले जीज़स गायब हो गए और फिर बारीक हवा की परत से प्रगट हो गए, (25) कि लोग पीटर की परछाई से चंगे हो गए, (26) कि अप्सराओं ने लोगों को जेलों से निकाला, (27) कि अविश्वासियों को शाश्वत यातना देने वाली आग्नेय झील पृथ्वी के नीचे प्रतीक्षा करती रहती है, (28) कि एक शहर जो कि 1500 मील घनाकार का है जिसमें जीवन के बाद मृत्यु है और जिसमें केवल ईसाइयों के लिए मकान एवं भोजन है।

ओ ईसाई भाइयो! यदि तुम इन ऊपर लिखी बातों पर विश्वास करते हो तो निश्चय ही यह तुम्हारे लिए उचित होंगी, मेरे लिए नहीं क्योंकि ये कहानियाँ प्राकृतिक नियमों के अनुकूल नहीं है तथा विज्ञान विरोधी हैं एवं बुद्धि संगत नहीं है। ये वास्तविकता तथा तर्क के अनुकूल भी नहीं हैं। यदि तुम इन विरोधा-भासों को नहीं समझ सकते हो तो निश्चय ही तुम सचाई को भ्रम से अलग नहीं कर सकते हो।

यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि कितने लोग ईसाइयत के 'पवित्र' लोगों यानि पादरियों की भ्रमात्मक बातों को मान लेते हैं, जबकि झूठ तो झूठ ही ठहरेगा भले ही उसे अनेकों ने मान लिया हो। यदि तुम इतने भोले भाले हो जो इन बातों को मान लेते हो तो तुम उस बच्चे की तरह नादान हो जो अपने बड़े भाई की इस बात को मान लेता है कि हॉल में एक राक्षस छिपा है।

मगर बन्धुओ ! घबराने की कोई बात नहीं है। मन के प्रकाश की ओर झांको और विवेक द्वारा स्वयं फैसला करो। तो ऊपर कही कपोल कल्पित गाथाओं की कलई स्वयं खुल जाएगी।

बाइबिल की असहिष्णुता : यदि ईसाइयत केवल झूठी होती तब तक तो कोई चिन्ता की कोई बात नहीं थी। उदाहरण के लिए सान्ताक्लाज़ काल्पनिक व झूठा है क्योंकि यदि लोग इसे बढ़ा चढ़ाकर कहें तो भी वह एक हानिकारक गाथा नहीं है। लेकिन ईसाइयत झूठी होने के साथ साथ वीभत्स भी है। मुझे आश्चर्य होता है कि एक तरफ तो तुम बाइबिल के परमात्मा को प्रेम करने का दावा करते हो जो कि एक घृणास्पद, उद्दण्ड, कामी और अत्याचारी प्राणी है जो कि ज़रा सी भी आलोचना सहन नहीं करता है। मैं तो ऐसे व्यक्ति के कभी आसपास में भी रहना पसन्द नहीं करूँगा। वास्तव में सचाई यह है कि बाइबिल का परमात्मा एक क्रूर पुरुष योद्धा है। हालांकि '**पहाड़ पर के दस उपदेशों**' में उसने कहा है कि '**तुम किसी को नहीं मारोगे**' तो भी उसने अपने सभी विरोधियों को जान से मार डालने का आदेश दिया। सभी को पानी में डुबोने और सबको समाप्त करने का आदेश दिया, बसन्त ऋतु को चौथी पीढ़ी पतझड़ में जाने को कहा (**एक्सोड्स** 20 : 5)। गर्भवती महिलाओं और बच्चों को चीर डालने का हुक्म दिया (**हॉसिया** 13 : 16)। बाइबिल का परमात्मा अपने क्रोधित अहंकार की तुष्टि के लिए मनुष्य और जानवरों के खून की मांग करता है, एक विशेष

समुदाय के लोगों के प्रति पक्षपाती है; स्त्रियों को पुरुषों से नीचा होने का फैसला देता है, परपीडक है जिसने अविश्वासियों (स्वयं में) को यातना देने के लिए एक नरक की रचना की तथा दुष्टता को बनाया (**इसैया** 45.7); अपाहिजों के साथ भेदभाव किया। (**लेवीटिकस** 21 : 18, 23) जिसमें कुंवारी लड़कियों को युद्ध विजेताओं को पुरस्कार रूप देने के लिए बचाए रकने का हुक्म दिया (**नम्बर्स** 31 : 15-18; **डयूटरोनोमी** 21 : 11-14); लोगों के मुंहों पर गोबर मलवाया (**मैथ्यू,** 2 : 3); एक पैगम्बर को चिढ़ाने के अपराधी बयालीस बच्चों को निगल जाने के लिए भालुओं को भेजा (2 **किंगस** 2 : 23-24).

लोगों को सांपों, कुत्तों, पूंछधारी नागों या ड्रेगनों, नशे में धुत्त शराबियों, तलवारों, तीरों कुल्हाड़ियों, आग,सूखा और शिशु-हत्याओं द्वारा दंड देता है और कहता है कि पिता अपने पुत्रों को खा जाएं (**एजिकील** 5 : 10)। क्या तुम्हें ये सब बातें ठीक जंचती है? क्या तुम ऐसे परमात्मा को आप पास भी रहना पसन्द करोगे?

जीज़स आखिर क्या चाहता था, प्रेम या युद्ध? : 'जीज़स जैसा बाप वैसा बेटा' का उदाहरण है। उसने कहा, 'मैं और मेरा पिता एक ही है'' और उसने ओल्डटेस्टामेंट के नियमों का अक्षरशः पालन किया और उन्हें उचित ठहराया (मैथ्यू. 5 : 18)। उसने उन्हीं पुराने नियमों का उपदेश दिया जिसमें बदला और मृत्यु है, क्रोध और उत्पीड़न है और सभी (अपने में) अविश्वारियों को नारकीय यातानाएं देने का मार्ग चुना। वह राक्षसों, भूत प्रेतों और परियों में विश्वास करता था। जीज़स ने स्त्रियों और गुलामों को दी जाने वाली यातनाओं की कभी निंदा नहीं की। यहाँ तक कि स्त्रियों को शिष्या बनने और अपने 'आखिरी भोज' में अतिथि होने से भी वंचित रखा गया। उसने आचारशास्त्र और दर्शन में भी नरक के अलावा नया कुछ नहीं जोड़ा। जीज़स का अपने भाइयों और मां के प्रति व्यवहार भी अनादरपूर्ण था। उसने उपदेश दिया कि हम अपने माता पिता से घृणा करें और परिवार से अलग हो जाएं। (**मैथ्यू**. 10 : 35-36; **लूक** 14 : 26)।

ये हैं जीजस व ईसाइयत के परिवार सम्बंधी आदेश! क्या इससे परिवारिक शान्ति होगी? जीज़स ने क्रोध की निन्दा की लेकिन वे स्वयं क्रोधित हो जाते थे (**मैथ्यू**. 5 : 22; मार्क 3 : 5) उसने लोगों को 'मूर्ख' कहा (**मैथ्यू**. 23 : 17, 19), सांप और नगण्य कब्र कहा हालांकि उसने सावधान किया कि ऐसी भाषा अपनाने से नारकीय आग का खतरा रहता है। (**मैथ्यू,** 5 : 22)। उसने कहा कि ''यह मत सोचो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करने आया हूँ। मैं शान्ति फैलाने नहीं अपितु तलवार चलवाने आया हूँ।'' (मैथ्यू. 10.34) यह है जीजस के शान्ति और प्रेम के संदेश के नमूना?

जीज़स ने गैर-मौसम में फल न देने के कारण। अंजीर के पेड़ को शाप दे कर कुम्हला दिया जो कि अनुचित था। (**मैथ्यू.** 21 : 19)। उसने (ज़ीजस में)

अविश्वासियों को जिन्दा जलाने का आदेश दिया (जोन 15 : 6)। जिसका कि चर्च उत्साहपूर्वक सदियों से पालन करती आई है। उसमें एक घोड़े की चोरी की (लूक 19 : 30-33)। उसने लोगों को हाथ पांव काटने, आँखें फोड़ने और गुप्तांगों को काट डालने का आदेश दिया। (मैथ्यू 5 : 29-30, 19 : 12)। क्या तुम मुझे ऐसे जीजस को मानने को कहते हो? लेकिन मैं अपना शुभ चिन्तक स्वयं चुन लूंगा।

वाइबिल और ज़ीजस के वचन हजारों विरोधाभासों से भले पड़े हैं। उदाहरण के लिए—अच्छे कामों को देखना चाहिए, और नहीं देखना चाहिए (**मैथ्यू** 5 :16; 6 : 1-4)। उसने कहा कि सरसों का दाना सबसे छोटा होता है (**मैथ्यू** 13 : 31-32) जो कि सरासर गलत है। बाइविल के मैथ्यू और लूक पुस्तकों के लेखक जीज़स की वंशावली भी एक जैसी नहीं लिख पाए जो कि ओल्ड टेस्टमेंट से भिन्न है तथा न्यूटेस्टामेंट में दो विभिन्न वंशावलियाँ दिखाई गई हैं।

नैतिकता की दृष्टि से भी मैं ईसाइयत को तिरस्कार करने योग्य मानता हूँ। मूल पाप, चरित्र हीनता, बदले में क्षमा, असहिष्णुता, शाश्वत सज़ा और विनम्र पूजा की अवधारणाओं को बुद्धिमान मनुष्य के विवेक, स्वाभिमान, विनम्रता और बुद्धिमत्ता के सामान्य स्तर से भी निचले दर्जे का पाता हूँ। वास्तव में वे भय और अज्ञानता से ग्रसित तथा अति प्रारम्भिक काल के जंगली विचारों व सभ्यताओं जैसे निचले स्तर की हैं।

ईसाइयत का खूनी इतिहास : संक्षेप में सार यही है कि ईसाइयत हानिकारक है। इतिहास साक्षी है कि अनेकों लोग, किन्हीं अन्य कारणों की अपेक्षा ईश्वर के नाम पर ज्यादा मारे गए हैं। चर्च का इतिहास एक शर्मनाक खूनी धर्म युद्धों, इन्क्वीजीशनों जैसे स्पेन, पुर्तगाल तथा गोवा के इन्क्वीजीशन, डायनों के नाम पर जलाना, अविश्वास संम्बंधी मुकद्दमें, अमरीकी उपनिवेशीय अहिष्णुता तथा स्थानीय की परम्पराओं के प्रति असम्मान, जैसे अमरीकी इंडियनों, व भारतीय आदिवासी जनजातियों के रीतिरिवाजों के प्रति घृणा, गुलामी का समर्थन, और स्त्रियों का उत्पीड़न आदि शामिल है। ईसाई रिलीजन की आधुनिक देन है—जोन्सटाउन की सामूहिक हत्याएं, फेथहीलरों की कठोर घोखाघड़ी और उत्तरी आयर लेंड में कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट युद्ध तथा भारत में रियांग आदिवासियों पर अत्याचार आदि।

अब आप समझ गए होंगे कि मैं बाइबिल के उपदेशों का सम्मान क्यों नहीं देता हूँ। असल में ईसाइयत एक अविवेकपूर्ण अवैज्ञानिक और साम्राज्यवादी व्यवस्था है।

'ईसाई भाइयो ! तुम्हें ईसाइयत की अविवेकपूर्ण, बेतुकी बातें मानने का पूरा अधिकार है। मगर ईश्वर के नाम पर मुझ पर कृपा करो। मुझे ईसाइयत के भ्रामक और धोखाघड़ी के जाल से मुक्त रखो।

हिन्दू राइटर्स फोरम, नई दिल्ली, (30 रु. सैकड़ा)